१

गोग्रास

अ. भा. कृषि गोसेवा संघ - गोपुरी - वर्धा.

अनुक्रमणिका

गोग्रास

वर्ष १ : अंक ९
११ जुलै ७७

गोपुरी, वर्धा

वार्षिक शुल्क ५ रु.
प्रति अंक ५० पैसे

* * *

संपूर्ण गोवंश को बचाओ

गोरक्षा अभियान पक्ष (१ सितंबर से ११ सितंबर ७७) के संबंध में चर्चा करते हुए पू. बाबा ने कहा कि आप सब लोगों ने मिलकर पक्ष मनाना तय किया है वह ठीक है।

आज के गोवधबंदी कानूनों की अपूर्णता की ओर संकेत करते हुए पू. बाबा ने कहा : 'आज के कानून में आप लोगों ने तय किया दिखता है कि माँ को मारना नहीं; बाप को मारने में हर्ज नहीं बूढा होनेपर"

१६-६-७७ पू. विनोवा – चर्चा से

* *

विनोबा-जयंति का कार्यक्रम

पू. विनोवाजी का संबंध गोरक्षा क्षेत्र में वहुत पुराना है। पू. बापूजी ने प्रथम गोसेवा संघ १९२८ में बनाया। तब से पू. विनोबाजी उसके सदस्य हैं। और तभी से उनका गोव्रत चलता है, वे गाय के ही दूध, दही, घी का इस्तेमाल करते हैं। पू. जमनालालजी ने १९४१ में गोसेवा संघ का काम सम्हाला। उसे भी पू. विनोवाजी का मार्गदर्शन रहा। १९४२ में पू. जमनालालजी के देहांत के वाद पू. वापूजी ने गोसेवा संघ का पुनर्गठन किया। माता जानकीदेवी को अध्यक्ष बनाया और उपाध्यक्ष के रूप में मुख्य जिम्मेवारी पू. विनोबाजी और सेठ घनश्यामदासजी विडला को सौंपी थी। पिछले अनेक वर्षों में गोवधबंदी के संवंध में कई प्रश्न उठते रहे हैं। सभी मौकों पर पू. विनोवाजी ने स्पष्ट रूप से कहा और लिखा कि गोवधबंदी के लिए कानून वनना ही चाहिए। गोवधबंदी का अर्थ भी उन्होंने स्पष्ट किया कि गाय-बैल की याने पूरे गोवंश की हत्या बंद होनी चाहिए। कुछ साल पहले पू. जगद्गुरू शंकराचार्यजी ने गोवधबंदी के लिए उपवास किये थे। उस समय पू. विनोवाजी ने उसका पूरा समर्थन किया था और उसमें सहयोग देने के लिए मुझे भेजा गया था। कुछ मित्रों ने वातचीत में कहा कि गोवधबंदी तो जनसंघवालों का विचार है और इसमें राजनीति है। इस पर पू. विनोवा ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं गोवधबंदी के मामले में पूरा जनसंघ के साथ हूं। अनेक बार गोवधबंदी के संबंध में तथा गोसेवा के संबंध में उनके भाषण हुए हैं। १९४२ के प्रथम गोसेवा संमेलन के वे अध्यक्ष थे।

यह जानकारी इसलिए दी जा रही है कि स्पष्ट कल्पना आवे कि गोरक्षा, गोसेवा पू. विनोबाजी के जीवन का एक बुनियादी काम रहा है। गत वर्ष गोसेवा के लिए उन्होंने प्राणों की बाजी लगायी थी। इस पार्श्वभूमि को देखते हुए पू. विनोबाजी की जयंति को गोरक्षा दिन और उस पक्ष को गोरक्षा अभियान पक्ष के रूप में मनाना सर्वथैव सुसंवादी माना जायेगा। फिर भी नया विचार होने के कारण पू. बाबा की राय जान लेना आवश्यक था। इस पक्ष को मनाने की बात पू. बाबा से कही। अपील का मजमून बताया, मुंबई संघ अधिवेशन का प्रस्ताव दिखाया। खुशी की बात है कि इस पक्ष के लिए उनकी अनुमति प्राप्त हो गई।

कार्यक्रम के बारे में भी पूछा गया, जितने कार्यक्रम सोचे गये थे उनकी सूची उनके सामने रखी। वचनपूर्ति याने केरल, बंगाल व गोवा में तुरंत गोवधबंदी कानून बने। इस कार्यक्रम के अलावा पू. बाबा ने निम्न कार्यक्रमों पर जोर देने के लिए कहा है :-

१) पूरे गोवंश की हत्या बंद हो। इसके लिए संविधान में संशोधन करना आवश्यक हो तो वह भी किया जाय। २) ग्रामसभा और गोसदन की योजना द्वारा संपूर्ण ग्रामोत्थान के कार्यक्रम पर जोर दिया जाय। यह भी पू. विनोबाजी ने कहा कि गोसदनों की पुष्टि के लिए गोग्रास के सदस्य अधिक से अधिक बनाये जावें।

यह पक्ष मनाने का प्रस्ताव प्रथमतः सर्व सेवा संघ के बंबई अधिवेशन में हुआ था। वह प्रस्ताव गोग्रास क पिछले अक में आया है। उसीका आधार लेते हुए सर्व सेवा संघ और कृषि-

गोसेवा संघ के सम्मिलित सभाने गोरक्षा पक्ष के लिए एक अपील तयार की है, जो अन्यत्र दी गयी है । इस सभा में ग्रामोत्थान के संबंध में पू. जयप्रकाशजी का जो भाषण हुआ, वह भि अन्यत्र दिया गया है । समग्र दृष्टि से गांवों का उत्थान किया जाय, इस बारे में पू. विनोबाजी तथा पू. जयप्रकाशजी एक राय हैं । गांवों को स्वयंपूर्ण बनाने में कृषि-गोसेवा, खादी-ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा, गोबर गॅस प्लँट, व्यसनमुक्ति, अदालतमुक्ति ये सभी बातें अंतर्भूत हैं ।

इस भूमिका के साथ गोरक्षा अभियान पक्ष मनाने के लिए कुछ सुझाव नीचे दिये जा रहे हैं । जहां जो संभव हो, उसके अनुसार स्थानीय परिस्थिति को देखकर इन कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया जाय ।

१) संपूर्ण गोवंशहत्याबंदी की मांग को जनता को समझाने के लिए जगह-जगह सभाएं, परिसंवाद लिये जावें ।

२) गोदुग्धप्रसार – सभा, संमेलनों में सामूहिक रूप से लोग यह व्रत लें कि अपने-अपने घरों में जहाँ तक हो सके गोदुग्ध का ही इस्तेमाल करेंगे ।

३) पांजरापोल और गोशालावाले उनके पास जो पशु हैं उनके अलावा गोसदन की अधिक से अधिक गायें रखने का प्रयास करें ।

४) गोशालाओं को अधिक गायें रखने में जो दिक्कतें आती हो उसकी जानकारी वर्धा और बंबई के कृषि गोसेवा संघ के दफ्तर को वे दें ।

५) मौजूदा कानून के बाहर कहीं गोवध होता हो उसे रोकने के प्रयास किये जावें । प्रधान कार्यालय को सूचना दी

जाय। प्रदेश कार्यालय से मिलकर प्रदेश सरकार को जानकारी दी जाय। जानकारी के साथ पूरा सबूत भी होना चाहिये।

६) ता. ११ सितंवर को प्रदेश की राजधानी में सभा रखी जाय। सरकार के और जनता के प्रमुख लोग उसमें भाग लें। संपूर्ण गोवंशहत्या-बंदी की मांग उस सभा में दुहरायें। जो प्रस्ताव पास होंगे वे वर्धा कार्यालय को भेज दें। यहां से संकलित करके वे शासन के सन्मुख रखे जायेंगे।

गाय की सेवा में लगे हुए सेवक और गाय से संबंधित कार्य करनेवाले शास्त्रज्ञों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपने अनुभव जनता के सामने रखकर गोसेवा के लिये लोगों को प्रोत्साहित करें। गाय के दूध में जो विशेष तत्व और गुण पाये जाते हैं उनको खास करके जनता के सामने रखने का काम शास्त्रज्ञ करें ऐसी उनसे मेरी विशेष प्रार्थना है।

यह कार्य धर्म, पंथ, पक्ष, निरपेक्ष है – इसलिये इसमें सभी लोग मुक्त रूप से सहयोग करें और अखबारवाले भी सहयोग दें ऐसी विनंती है।

– संपादक
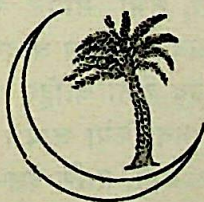
विनोबा जयन्ति – गोरक्षा अभियान पक्ष

१ सितंबर से ११ सितंबर १९७७

ता. ११ सितंवर को संत विनोवाजी के ८२ वर्ष पूरे होकर ८३ वां जन्म-दिन आ रहा है। चूंकि गोरक्षा के क्षेत्र में सन्त विनोवाजी के उपवास संकल्प के कारण पिछले वर्ष देश में सर्वत्र चेतना आई है; सर्व सेवा संघ ने तय किया है कि ता. १ सितंबर से ११ सितंवर तक गोरक्षा पक्ष मनाया जाय एवं उसका विशेष अभियान हो। निम्न कार्यक्रमों पर जोर दिया जाय :

१. वचनपूर्ति :

संत विनोवाजी को भारत सरकार ने पूरे भारत में गोवध-बंदी कानून वनवा देने का आश्वासन दिया था। उसके अनुसार सारे प्रदेशों में गोवधवंदी कानून बन गये हैं। केरल और वंगाल के कानून ११ सितंवर १९७७ तक बन जाने की बात थी। हमें विश्वास है कि इस आश्वासन को भी पूरा किया जायगा। गोवा सरकार भी सभी राज्यों की तरह गोवधबंदी करेगी ऐसी आशा है।

२. गोवंश हत्याबंदी :

गाय, वैल, नंदी, सभी समान रूप से उपयोगी हैं एवं भारतीय संस्कृति में सबका समान आदर है। अत: बैल सहित पूरे गोवंश की हत्या बंद होनी चाहिए। उसके लिए आवश्यक हो तो विधान में संशोधन किया जाय। राष्ट्रीय दृष्टि से गाय की वरीयता मान्य की जाय, ताकि देश की सभी ताकतें गोवंश के उत्थान में लग सकें। गाय भारतीय अर्थशास्त्र व संयोजन की रीढ है।

३. गोसंवर्धन :

गोवंश की उन्नति के लिए आवश्यक है कि प्रजनन नीति सर्वांगी हो याने बछडी दुधारू हो, बछडे खेती लायक उत्तम बैल बनें। डेरियों में गोदुग्ध को भैंस-दूध के बराबर पूरे भाव मिलें। पशु-खाद्यों का निर्यात बंद हो। घर-घर में गोदुग्ध का प्रसार हो।

४. गोसदन, गोशाला :

गांवों में ग्रामसभाएं गठित की जावें। उनके द्वारा गोसदन कायम किये जावें। हर गांव में कृषि-गोसेवा, खादी-ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा, गोबर गैस प्लान्ट, व्यसन-मुक्ति और अदालत-मुक्ति, सबका सम्मिलित सहयोग लेकर ग्रामों का उत्थान किया जाय। मौजूदा गोशाला, पांजरापोलों को भी असहाय पशुओं के रखने की अपनी क्षमता अधिकाधिक बढानी चाहिए।

५. गोग्रास योजना :

गोसदनों एवं गोसंगठनों को मजबूती देने के लिए प्रतिदिन ५ पैसे मानकर सालाना अठारह रुपये १८) देने वाले गोग्रास योजना के सदस्य अधिक से अधिक बनाये जावें।

इस आयोजन का समर्थन करते हुए हम भारतीय जनता से निवेदन करते हैं कि धर्म, जाति या पक्ष के किसी भेदभाव विना सभी गोरक्षा अभियान में सक्रिय योगदान दें।

निवेदक

जयप्रकाश नारायण

जानकीदेवी बजाज

सिद्धराज ढड्ढा
अध्यक्ष-सर्व सेवा संघ

धरमसी खटाऊ
अध्यक्ष-अ. भा. कृषि गोसेवा संघ

जयन्तिलाल मानकर
अध्यक्ष-भारत गोसेवक समाज

प्रो. शेरसिंह
संयोजक-संसदीय कृषि-गोसेवा मंच

रतनकुमारी देवी
संयोजक-संसदीय कृषि गोसेवा मंच

★

पुनर्गठन

अखिल भारत कृषि-गोसेवा संघ की वार्षिक साधारण सभा हाल ही में बंबई में हुई। इस सभा में संघ का पुनर्गठन किया गया। डॉ. श्रीमन्नारायणजी महसूस कर रहे थे कि कृषि-गोसेवा संघ का काम बढता जा रहा है, शिक्षा के क्षेत्र में उन पर जिम्मेदारियां बढ रही हैं, ऐसी स्थिति में कृषि-गोसेवा संघ के काम से वे मुक्त होना चाहते थे। उनके विशेष प्रयत्न से श्री. धरमसीभाई खटाऊ की सेवाए अध्यक्ष-पद के लिए प्राप्त हुई। इसके लिए एवं आज तक की सेवाओं के लिए डॉ.श्रीमन्नारायणजी को धन्यवाद दिया गया। खुशी की बात है कि भविष्य में भी उनकी सेवाएं यथावत् मिलती रहेंगी।

हमारे नये अध्यक्ष श्री. धरमसीभाई खटाऊ का हम स्वागत करते हैं। आप व्यापारी क्षेत्र में जानेमाने उद्योगपति हैं। सेवा के क्षेत्र में आपका बडा स्थान रहा है। सेंट्रल रिलीफ फंड, जिसकें द्वारा अकाल में गायों की बहुत बडी सेवा का काम सारे देश में पिछले कई वर्षों से चलता आया है, के आप अध्यक्ष हैं। भारतीय विद्याभवन की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक सेवाओं से सारा भारत परिचित है। संकट के समय भारतीय विद्याभवन की अध्यक्षता आपने स्वीकार की और उसे सही दिशा में अग्रसर कर रहे हैं। व्यापारी क्षेत्र में आपका नाम व्यवहारशुद्ध व्यापारियों में गिना जाता है। ऐसे सुयोग्य अध्यक्ष की प्राप्ति के लिए हम उनका हृदय से स्वागत करते हैं। साथ ही श्री. मानकरजी तथा श्री. तुलसीदासभाई का भी आभार मानते हैं कि उनका सतत संपर्क उनके साथ रहा है और रहेगा।

इस नये संगठन में चार युवा मंत्री आये हैं। उनका भी स्वागत करते हैं। श्री. प्रेमचंद गुप्ता दिल्ली-निवासी हैं। गोरक्षा महाअभियान समिति के मंत्री रहे हैं। गोरक्षा के लिये अपना जीवन लगाया है और आगे भी गोसेवा के लिये जीवन लगाने का संकल्प है। सांसदीय कृषि-गोसेवा मंच दिल्ली के आप संगठन मंत्री हैं।

श्री.दशरथभाई ठाकर गोसेवा के क्षेत्र में वहुत ही अनुभवी व्यक्ति हैं। कई वर्षों से वंबई पांजरापोल के कार्य को बडी कुशलता से संभाल रहे हैं। वंबई में कृषि-गोसेवा का एक दफ्तर भी रहेगा, जिसे वे संघ के अध्यक्ष श्री. धरमसीभाई और उपाध्यक्ष श्री. तुलसीदासभाई की सलाह से संभालेंगे। वे संघ की महाराष्ट्र शाखा के मंत्री भी हैं। उनका इस अवसर पर हम हार्दिक स्वागत करते हैं।

एक तरुण मंत्री श्री. महावीर प्रसाद अग्रवाल रायपुर-निवासी मिले हैं। वे रायपुर की गोशाला को प्रत्यक्ष रूप से संभालते हैं। गोसेवा के क्षेत्र में उनका कई वर्षों का प्रत्यक्ष अनुभव है। उनका दावा है कि क्रॉस ब्रीड की अपेक्षा अधिक अच्छी औसत नसल तैयार की है जिसकी बछडियां अधिक दूध देने के साथ-साथ बछडे खेती योग्य अच्छे बैल भी होते हैं। व्यापार में व्यस्त होने पर भी गोसेवा के लिये समय देना स्वीकार किया है। हम उनका स्वागत करते हैं।

श्री. विरदीचंदजी चौधरी बहुधंधी हैं। फिर भी समर्थ पुरुष हैं। उनके मंत्रीपद स्वीकारने की कोई उम्मीद नहीं थी। फिर भी सहज पूछा तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी और दक्षिण के चारो प्रांतों को संभालना स्वीकार किया। गोसेवा और साहित्य-

प्रचार में उनकी वर्षों से रूचि रही है। हाल ही में वे बंगलोर के विश्वनीडम के फार्म कार्य से मुक्त हुए हैं। अतः उन्हें समय मिलना संभव हुआ है। हम उनका स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि वे गोसेवा के काम में एकाग्रता से जुट जायेंगे।

श्री. ओमप्रकाशजी त्यागी एवं श्री. प्रेमचंदजी गुप्ता के प्रयत्नों से दिल्ली में सांसदीय कृषि-गोसेवा मंच का संगठन हुआ है। इस मंच के संयोजक प्रो. शेरसिंहजी एम. पी. भूतपूर्व केंद्रीय उपमंत्री रहेंगे। एवम् दूसरे संयोजक श्रीमती रतनकुमारी देवी एम्. पी. रहेंगी। आप राज्यसभा में काँग्रेस पक्ष की सदस्या हैं। गोभक्त स्व. से. गोविंददासजी मालपाणी की सुपुत्री हैं। इस मंच के गठन और संयोजन का भार संभालने के लिए दोनों संयोजकों का हार्दिक स्वागत है।

नयी कार्यवाहक समिति गठित की गयी है। सदस्यों की सूची अलग से दी है। कार्यसमिति में अभी २६ सदस्य हैं। एक छोटी कार्यसमिति ११ सदस्यों की बनायी गयी है, जो आवश्यकता-नुसार समय-समय पर मिलती रहेगी।

राधाकृष्ण बजाज
महामंत्री

सर्वसाधारणसभा और कार्यकारिणीसभा का वृत्त

अ. भा. कृषि गो सेवा संघ की सर्वसारण सभा तथा कार्य-वाहक समिति की सभा ता. २८ तथा २९ जून १९७७ को बंवई में आमंत्रित की गयी थी। इन सभाओंकी एक वैठक सर्व सेवा संघ प्रवंध समिति के साथ संमीलित रूपसे हुई। इस सभामें पू. जयप्रकाश नारायण भी पधारे थे। देश के विभिन्न प्रदेशों से करीब ३० /४० कार्यकर्ता एकत्रित हुए थे।

गोसेवा संघ के अध्यक्ष श्री. श्रीमन्नारायणजी ने मई १९७७ में बंवई में संधकी सभा में ही सूचित किया था कि कार्याधिक्य के कारण वे संघ के कार्य से मुक्त होना चाहते हैं। इस बीच प्रसिद्ध उद्योगपति श्री. धरमसी भाई खटाऊ से प्रार्थना की गयी कि वे संघका अध्यक्ष बनना स्वीकार करें। उन्होने संघ के कार्य की पूरी जानकारी लेकर संघका अध्यक्ष बनना स्वीकार किया। डॉ. श्रीमन्नारायणजीने उनका नाम अ. भा. कृषि गोसेवा संघके अध्यक्ष पदके लिये प्रस्तावित किया। सर्वानुमति से उसे स्वीकार कर श्री. धरमसीभाई खटाऊ संघ के नयें अध्यक्ष वनाये गये। डॉ. श्रीमन्नारायणजीने अध्यक्षके नाते संघकी जो सेवा की उसके लिये धन्यवाद का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

संघके सदस्यो के समक्ष प्रस्ताव रखा गया कि ता. १ सितं. से ११ सितंबर १९७७ तक देशभरमें गोरक्षा अभियान पक्ष मनाया जाय। मई माह में बंवई में सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था कि ऐसा एक पक्ष मनाया जाय। इस प्रस्तावानुसार गोसेवासंघ का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगावे। पिछले

वर्ष पू. विनोबाजीने संकल्प किया था कि ११ सितंबर १९७६ तक भारत में गोवध बंदी का सरकारी ऐलान न हो तो वे आमरण उपवास करेंगे। सरकार की ओरसे आश्वासन दिया गया था कि ११ सितंबर १९७७ तक जिन प्रांतों में कानून नही है वहां बनाये जायेंगे। बंगाल, केरल तथा गोवा में कानून अभी बनने बाकी हैं। पू. बाबाने बने कानूनों की और संकेत करते हुवे कहाँ 'आपने तय किया दिखता है कि मां को मारेंगे नही, बापको मारने में हर्ज नही बुढा होनेपर'। इस से गो ही नहीं गोवंश की भी हत्या बंद हो इसकी तीव्रता उनके मन में है, यह ध्यानमें रखकर कार्यक्रम तय करनेका सोचा गया। इस पक्ष के आयोजनमें यह भी एक उद्देश है कि इस वर्ष की अवधी के भीतर सरकार द्वारा वचन की पूर्ति हो। पक्ष मनाने की योजना को सबने सहर्ष स्वीकार किया। इस के लिये एक अपील निकालने का तय किया गया। यह अपील इस अंक में अलग से दी गयी है।

अन्य प्रमुख विषयों में से एक चर्चा का विषय यह रहा कि भारत से बडी मात्रामें खली के रूपमें पशुखाद्य का निर्यात होता है। इससे देशमें पशुखाद्य की कमी होती है, उसकी कीमत बढती है और देशके पशु अपने खुराक से वंचित होनेके कारण दूध कें उत्पादनमें कमी होती है। इस प्रश्न का गहराई से अध्ययन कर केन्द्र सरकार के स्तरपर पशुखाद्य का निर्यात न हो इसका प्रयत्न किया जाय। इस संबंधमें श्री. पागेजी, अध्यक्ष कृषि गोसेवा संघ महाराष्ट्र शाखाने जानकारी दी कि कुछ वर्षों पूर्व तक भारत से करडी की खलीका निर्यात नहीं होता था। पर जापान से इसकी मांग आने के कारण मिलो द्वारा करडी का तेल निकाला जाने लगा है और खली भी निर्यात हो रही है। यदि यह निर्यात बद हो जाय तो

करडी को पेरनेवाले पुरानी वैल घानियां बंद होगयी है वे पुनः चलने लगेगी। एक ग्रामोद्योग को जीवनदान मिलेगा।

श्री. डी. एन खुरोडी वंबई गोसेवा संघ के कार्यवाहक समितिके सदस्य हैं। महाराष्ट्र सरकार के ऊंचे अफसर रहे हैं। बंबई में आरे कॉलनी को स्थापित करनेका मुख्य श्रेय उन्ही को जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि के शास्त्रज्ञ हैं। उन्होंने सुझाया कि गाय का दूध भैंस के दूध की अपेक्षा किन कारणों से और किस प्रकार अच्छा है इसका वैज्ञानिक अध्ययन कर उस जानकारी को सितंबर ७७ के पूर्व अखबार, रेडिओ तथा अन्य प्रचार साधनों द्वारा प्रसारित करना चाहिए। सवके आग्रह से उन्होंने स्वीकार किया कि वे इस दृष्टि से एक संक्षिप्त अध्ययन तयार कर देंगे। गायों के दूध में भैंस के दूध को तुलनामें विशेष गुण है यह भारत की लोगों की धारणा है। इसलिये इस सभाने सुझाव दिया है कि वडेवडे शहरों में दूधका बंटवारा करते है तव गाय का दूध और भैंस का दूध अलग अलग बोतलोंमें सप्लाय किया जाय। गायका दूध चाहनेवालों कों वही दूध देनेकी कोशिस हो।

भारत के कृषि-गो-सेवा की समग्र विकास के लिए कृषि गोसंवर्धन कौन्सिल वनाने की जरूरत इस सभाने महसूस की साथ साथ भारत के गायों की नसल सुधारने के लिए हर गोशाला, पिंजरापोल और देहातों में सांड रखे जाय ऐसा सुझाव आया।

गोसेवा संघ के संगठन को मजवूत करने की दृष्टि से कई सुझाव आये। इनसे संबंधित विविध पहलुओंपर गंभीरता से विचार हुआ। यह सारांश रहा कि प्रांतीय संगठनो को अधिक मजबूत और सक्रिय वनाना चाहिए, प्रांतों में जो गोशाला तथा पींजरापोलों के संघ आज बने हैं उनसे संपर्क स्थापित कर

अनुपयोगी गायों को आज की गोशालाओं में स्थान कैसे मिले इसका विचार किया जाय। महाराष्ट्र गोसेवा संघ शाखाने संकल्प घोषित किया कि महाराष्ट्र गोशाला फेडरेशन की मदद से दस हजार अनुपयोगी गायों के पालन का कार्यक्रम वे पूरा करेंगे। गुजरात में गोशाला और पिंजरापोलों में कोई भी गाय भेजें तो रखने का इंतजाम बना है ऐसा मुकुंदभाईने बताया। यह भी सुझाया गया कि गाय को आर्थिक दृष्टि से मजबूत किये बगैर केवल भावुक दृष्टि से काम नहीं चलेगा। इससे यह भी दृष्टि साफ करनी होगी कि क्रास-ब्रीडिंग के बारे में हमारी दृष्टि क्या होगी। देश में जो विदेशी नस्ल के साथ संकरण हो रहा है उसका वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के लिए अध्यक्षजी द्वारा एक अध्ययन दल बनाया जाय।

ता. २९.६.७७ को पुनः कार्यवाहक समिति की सभा हुई। नये अध्यक्ष श्री. धरमसी भाई ने सभा की अध्यक्षता की। डॉ. श्रीमन्नारायणजी तथा श्री. तुलसीदास भाई संघ के उपाध्यक्षजी ने उनका स्वागत किया। नये अध्यक्षजी ने उनपर जो काम मित्रोंने डाला है उसके लिए अपनी शक्तिनुसार प्रयत्न करने का आश्वासन दिया।

संघ के कार्य को आगे बढाने के लिए नयी कार्यवाहक समिति घोषित की गयी। उनके सदस्योंकें नाम अन्यत्र दिये गये है।

गोसेवा संघ में जयप्रकाशजी का भाषण

"मेरा कॉन्ट्रिब्युशन राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में रहा है। बाद में मैं सर्व सेवा संघ के साथ जुड गया। गोसेवा के क्षेत्र में जीवन खपानेंवाले आप जैसे लोगों को इसबारे में बताने लायक कोई बात मेरे पास नही है।

एक बात मुझे कहनी है कि आपका मुख्य काम लोकतंत्र के प्रहरी बनने का इस समय होना चाहिये। लोकतंत्र की बुनियाद को आपको मजबूत बनाना चाहिये। आज लोकतंत्र केंद्र और राज्यों के राजधानीयों तक ही सीमित है। महाराष्ट्र में जिला परिषद को कुछ अधिकार दिये गये हैं और तमिलनाडू में पंचायतों को भी कुछ अधिकार है। लेकिन गांव को इकाई मान कर शासन के अधिकार देने का काम कही नही दिखाई देता है। पं. जवाहरलाल नेहरूजी इस बात को महसूस कर रहे थे। नागोर में पंचायत राज का संमेलन हुआ था। लेकिन बाद में वह विचार पिछे पड गया। उसको हमें फिर से पुनरज्जिवित करना है।

क्योंकि ऐसा नही हुआ तो देश के लिए बडा खतरा पैदा होगा। दिल्ली और उपर का ढांचा टूट गया और नीचे कोई ढांचा नही बना तो देश में भयंकर हालत होगी। हमारा देश शेंकडो सालों से आक्रमणों को झेलता रहा। फिर भी हम बने रहे। क्योंकि नीचे एक मजबूत नींव थी। इतिहास इसका साक्षी है।

प्रदेशों में स्वराज्यसंस्थाओंको कानूनन अधिकार देने से भी यह नही बन सकेगा। राजनैतिक पक्षों को भी इस में

रूची नही है। क्यों कि लो ों की शक्ति वढती है तो इनकी सत्ता को धक्का लगता है। कुछ राजनैतिक व्यक्ति आपकी मदद करेंगे लेकिन पक्ष नही कर सकतें।

तो इसकी कुछ व्यावहारिक योजना वनाईये। अगले पाच-छह माहका कार्यक्रम तय करे। प्रदेशों में कही कानून वने है। कंही केंद्र और राज्य, कंही इन दोनों के साथ जिला ओर वहोत कम जगह इन तीनों के साथ पंचायत ऐसीं चार टायरवाली रचना बनी है। लेकिन कुल मिलाकर ब्लॉकस्तर तक ही ध्यान गया है। ग्राम कों कही चित्र में नही लाया है।

हमारा ग्रामस्वराजका काम पहले से ही चलता आरहा है। वह जोरोंसे चलाना चाहिये। उसके बारें में सर्व सेवा संघ की बैठक में सबेरें मैंने वताया है कि अेक अध्ययन दल वनाकर किस प्रदेश में क्या रचना है और पंचायतराज-ग्रामराज स्थापन करने के लिये कानून में, चाहे तो विधान में कौनसा संशोधन हों इसकी नोट तयार करे। उसको लेकर मेरे साथ चर्चा करें और वादमें हमारे सबके सुझावों को इकट्ठा करके केंद्रसरकारसे हम मिले।

गावमें ग्रामसभा वने, वह नियत समयपंर वैठे, कार्यक्रम तय हो और उसके मुताविक काम चलें। यह चार वातें हर गांव में कैसें होगी इसकी हमारी ओर से कोशीश हो। यह काम हम ही कर सकते है।

उपर में पार्टीया काम करती है लेकिन पंचायत राज या

नगरीकरण की बढती हुई रफ्तार

– सरला देवी –

किंगस्ली डेविस ने लिखा है कि विशाल नगरीकरण में नगरों की आबादी के बीच इतना निकट मानवीय सम्पर्क और सामाजिक पेचीदगियां उत्पन्न हुई हैं जैसे पहले कभी नहीं हुई होगी। वे मानते हैं कि मनुष्य की सामाजिक उत्क्रांति में यह एक नया मौलिक कदम है।

सन् १८५० तथा १९५० के बीच में एक लाख से ज्यादा आबादीवाले नगरों में रहनेवालों की संख्या १८०० तथा १८५० के बनिस्बत बहुत ज्यादा तेजी से बढ गई थी, लेकिन १९५० तथा १९६० में वह पहले ५० वर्षों के बनिस्बत दूनी तेजी से बढी। यदि इसी रफ्तार से वह संख्या बढती रहेगी तो १९९० तक दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी इस प्रकार के विशाल नगरों में रहेंगी।

आजकल फ्रांस के योजनाकार बहुत चिंतित होने लगे हैं, क्या भविष्य में उनके राष्ट्र का चित्रण 'पेरिस के चारों ओर रेगिस्तान' के वर्णन से नहीं करना पडेगा।

विलायत में लोग पाते हैं कि पुराने जमाने में जो नगर अपने सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध थे, आजकल बहुत तेजी से उनका

स्थानिक स्वराज संस्थाओंके – चुनावोंमें पार्टी के नाम पर कोई काम नहीं चले।"

इसके बाद कुछ प्रश्नोत्तर हुवे।

२८ जून ७७ गो से. सं. कार्यकारिणी बैठक बंबई

पतन हो रहा है तथा उनके आस-पास के देहाती क्षेत्र देश के 'सही जीवन' से इतनी दूर हो रहे हैं जैसे पहले कभी नहीं हुआ है। आधुनिक न्यूयार्क के दक्षिणी ब्रोंक्स की आवादी लगभग ५ लाख की है। उनमें से ४०% बेकारी का भत्ता पा रहे हैं, ३०% काम करने लायक लोग बेकार ही हैं, २०,००० लोगों को मादक औषधियों का व्यसन है, ९५०० लोग गिरोहों में शामिल हैं, उनके निवास टूटे-फूटे और असुरक्षित हैं, २०% में पानी नहीं है, ५०% में जाडे में गरम करने की व्यवस्था नहीं है।

२० वर्ष पूर्व सिर्फ अतियांत्रिक पश्चिमी यूरोप के देश अनाज का आयात करते थे। बाकी के देश कम-बेशी मात्रा में खुराक निर्यात करते थे। लेकिन आजकल एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी और मध्य अमेरिका, पश्चिमी और पूर्वी यूरोप तथा रूस सब बडे पैमाने पर उत्तरी अमेरिका से अनाज का आयात करते हैं, उस अनाज का उपभोग ज्यादातर नगरों में होता है। आजकल सारी दुनिया की खुराक को आवश्यकता में ३.८% वृद्धि हुई है, जहां खुराक के उत्पादन में सिर्फ २.६% वृद्धि हुई है।

नगरीकरण की रफ्तार औसत में कृषि में ऊर्जा के उपयोग की मात्रा पर निर्भर है। सन १८०० में यूरोप में २.२% आवादी एक लाख से ज्यादा आवादीवाले नगरों में रहती थी, खनिज, ईंधन (कोयला तथा तेल) के उपयोग की वजह से आजकल के विशाल नगरों का निर्माण संभव हुआ। जैसे-जैसे लोग रहने के लिए देहात से नगरों की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे उनके लिए अनाज उपलब्ध करने में ज्यादा-ज्यादा उर्जा की आवश्यकता होती है। उस उर्जा का २५% अनाज पैदा करने में उपयोग

होता है, ७५ % परिवहन पर होता है। आजकल दुनिया की आबादी चार अरब है, यदि हम 'हरित क्रांति' की पद्धति से उन्हें पूरी खुराक खिलाना चाहते हैं तो तीस साल के अन्दर दुनिया के अभी तक परिचित सब तेल स्रोत खत्म हो जायेंगे।

श्री लेस्टर आर. ब्राऊन लिखते हैं कि जिस दुनिया में तेल की कमी होने लगी है तथा देहाती बेकारी बढ़ रही है, ऐसी दुनिया में अनाज के उत्पादन में श्रम के स्थान पर यंत्र का उपयोग करने में कोई तुक नहीं है। अमेरिका में देहाती बेकारी २५ % है, भारत में अल्प समय और पूरे समय की बेकारी मिलाकर वह कितनी ज्यादा होगी ?

कुछ लोग समझते हैं कि निकट भविष्य में उस समस्या का हल नभिकीय उर्जा से हो सकेगा। लेकिन श्री ब्राऊन स्पष्ट दिखाते है कि ऐसे प्रयोगों में आम स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के लिए कितना खतरा है। वे समझते हैं कि सिर्फ सौर्य-शक्ति के उपयोग से ही उर्जा की मात्रा स्थाई तौर पर बढ सकती है और क्योंकि सौर्य-शक्ति का फैलाव विस्तृत है, इसलिए उसका उपयोग करने के लिए घनी आबादी नहीं, फैली आबादी की आवश्यकता होगी।

यदि अनाज का उत्पादन बढाना हो तो यह मुख्य कदम सामने है। नगरीकरण के द्वारा हर साल हजारों एकड कृषि-भूमि निगली जाती है। पिछले २०० वर्षों में अमेरिका में तेईस करोड साठ लाख एकड जमीन (याने आजकल के उपयोग की कृषि-भूमि के ५०% से ज्यादा जमीन) नगरों तथा सडकों के फैलाव से नष्ट हुई है, यदि दुनिया के लोगों को भूखों नहीं मारना है तो इस दिशा में बदलने की जरूरत है। (सप्रेस)

• •

आंध्र प्रदेश कृषि-गोसेवा संघके निर्णय

अ. भा. कृषि-गोसेवा संघ आंध्र प्रदेश शाखा की कार्यकारिणी की वैठक बुधवार, ८-६-७७ को संस्था के उपाध्यक्ष श्री. पन्नालालजी पित्ती की अध्यक्षता में हुई ।

इस वैठक में चर्चा के दौरान निम्न निर्णय लिये गये :–

१) हर माह के ग्यारह तारीख को प्रार्थना सभा हो ।

२) पोचमपल्ली या अन्य जगह गोसदन के लिये भूमि मिल रही है, वहाँ गोसदन चलाने का प्रयास किया जाय ।

३) आंध्र प्रदेश के गोवधवंदी कानून को और चुस्त वनाया जाय और कानून का अमल ठीक से होने के लिये जनजागृति का प्रयास हो ।

४) 'गोग्रास' पत्रिका तेलुगु में भी शुरू हो । कम से कम तीन हजार उसके सदस्य बनायें जाय ।

५) जिला शाखायें खोली जाय ।

संपूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध लगे

-विश्वंभर प्रसाद शर्मा-

भारत गोसेवक समाज, ३ सदर थाना रोड, दिल्ली- ६ के तत्वावधान में ता. १३ जून ७७ को गोसेवा कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी भारत गोसेवक समाज के उपाध्यक्ष प्रो. रामसिंगजी की अध्यक्षता में हुई।

भारत गोसेवक समाज के महामंत्री श्री. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने कहा कि जनता पार्टी के सत्तारूढ होने के बाद गोभक्तों में यह भावना बलवती हो रही है कि देश में संपूर्ण गोवंश-हत्या पर प्रतिबंध लगे। इसके लिए प्रभावशाली रूप में वैधानिक तरीके से जनता सरकार से अनुरोध किया जाय।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान श्री. राम-गोपालजी वानप्रस्थ ने शर्माजी के विचारों से सहमति प्रकट करते हुए कहा कि वर्तमान अनुकूल स्थिति में संपूर्ण गोवंश-हत्याबंदी की मांग को स्वीकार करने के लिए सरकार से कहना चाहिए। आपने यह आश्वासन दिया कि आर्य समाज इस कार्य के लिए पूरा सहयोग देगा।

श्री. वसंतरावजी ओक ने कहा कि भारत गोसेवक समाज और कृषि-गोसेवा संघ आदि संस्थाओं को संयुक्त रूप से संपूर्ण गोवंश-हत्याबंदी के लिए प्रयत्न करना चाहिए। साथ-साथ गोसंवर्धन, गोपालन की रचनात्मक प्रवृत्तियां भी चलानी चाहिए।

श्री. प्रेमचंदजी गुप्ता ने कहा कि धर्माचार्यों और संतों का सहयोग भी इस कार्य में लिया जाय। दिल्ली में एक विशाल गोरक्षा संमेलन आयोजित किया जाय, जिसमें गोरक्षा संबंधी समस्त पहलुओं पर विचार हो। दिल्ली पींजरापोल के मंत्री श्री. मनी-रामजी गुप्ता ने इस विचार का समर्थन किया।

प्रो रामसिंग ने कहा कि विनोबाजी के गोहत्या-बंदी संकल्प में संपूर्ण गोवंश-हत्याबंदी की बात नहीं थी। इससे अनेक गोभक्तों को निराशा हुई, क्योंकि देश की जनता का मानस संपूर्ण गोवंश-हत्याबंदी के पक्ष में रहा है। प्रभावशाली ढंग से कार्य करने पर सफलता अवश्य मिलेगी।

अंत में डॉ. श्रीमन्नारायणजी ने कहा कि पू. विनोबाजी के गोवधबंदी संकल्प का ही यह परिणाम है कि बंगाल, केरल, गोवा छोडकर सभी राज्यों में गोहत्या-बंदी कानून बन गये। आपने यह भी बताया कि संपूर्ण गोहत्याबंदी के प्रश्न पर प्रधान मंत्री श्री. मोरारजीभाई देसाई से चर्चा हुई है। उन्होंने आश्वासन दिया है कि समय आने पर पूर्ण सहानुभूति के साथ विचार करेंगे। उन्होंने यह भी कहा है कि वे चाहते हैं कि गाय को पूर्ण वरीयता प्राप्त हो, ताकि उसका रक्षण और पालन-पोषण अनिवार्य कर्तव्य बन जावे। डॉ. श्रीमन्नारायणजी ने दिल्ली में गोरक्षा संमेलन बुलाने के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि संमेलन प्रभावशाली हो एवं उसमें गोसेवा के संपूर्ण पहलुओं पर विचार हो। विस्तृत कार्यक्रम तयार किया जाय एवं एक शिष्ट-मंडल, जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधि हों, भारत सरकार से मिलें।

चर्चा के अंत में तय किया गया कि जुलाई-अगस्त में

गोबर गैस से आटा चक्की का इंजन चलाया

ग्वालियर २८ मई (समाचार)– ग्वालियर जिले के डवरा ग्राम के एक युवा उद्यमी कृषक श्री. रवींद्र मोहन गुप्त ने साढे छह हार्स पावर के डिजल इंजन से चलनेवाली आटा चक्की के इंजन को गोबर गैस से संचालित कर लिया है। इसका प्रदर्शन श्री. गुप्ता ने विगत २४ मई को सफलतापूर्वक डवरा में किया।

सोलह इंच व्यास की इस आटा-चक्की को चलाने के लिए साढे छह हार्स पावर का डीजल चालित इंजन लगा हुआ था। श्री. गुप्त गोवर गैस का उपयोग इंधन के रूप में करने के अतिरिक्त उसकी उर्जा का उपयोग ऐसे इंजनों के चलाने में करने के लिए वहुत दिनों से प्रयत्नशील थे। इस दिशा में उन्हें कृषि विभाग के उपसंचालक से मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिला।

श्री. गुप्त को इस दिशा में पहली सफलता लगभग चार मास पूर्व मिली, जव उन्होंने अपने सिंचाई पम्प में इंजन को गोबर गैस से संचालित किया, लेकिन गोबर-गैस प्लँट एक ही स्थान पर होने के कारण यह सफलता इतनी अधिक व्यावहारिक प्रतीत नहीं हुई। तत्पश्चात उन्होंने अपनी आटा चवकी के साढे

दिल्ली में एक बृहत गोसेवा संमेलन आयोजित किया जाय। उसमें एक शिष्टमंडल गठित किया जाय जो शीघ्र ही प्रधानमंत्री से मिलकर संपूर्ण गोवंश-हत्यावंदी की मांग प्रस्तुत करें। इस अभियान में सभी गोसेवा संस्थाओं का सहयोग लिया जाय।

★

छह हार्स पावर के डीजल इंजन को गोबर गैस से जोडकर चालू करने का प्रयोग किया। यह प्रयोग अन्तत: सफल रहा।

श्री. रवींद्र मोहन गुप्त ३५ वर्षीय ग्रेजुएट हैं। एक परम्परागत काश्तकार परिवार के सदस्य होने के बावजूद अपनी जिज्ञासा-प्रवृत्ति के कारण उन्हें नये प्रयोग करने में विशेष रुचि है। कृषि उप-संचालक का प्रोत्साहन पाकर उन्होंने ३०० घनफुट क्षमता का गोबर गैस संयंत्र तैयार किया और सफलतापूर्वक लगाया। इसके लिए कृषि विभाग द्वारा उन्हें ८५० रुपये का अनुदान दिया गया।

CENTRALIZATION AND DECENTRALIZATION

(An Analytical Study)

J. C. Kumarappa

No one of us is likely to question the purpose of an economic order which may be stated for clarity's sake as follows:

1. It should create wealth as efficiently as possible.

2. It should distribute wealth widely and evenly.

3. It should supply the needs of the people before comforts and luxuries are catered for.

4. It should be a means for eliciting all the faculties of the worker and developing his personality.

5. It should be conducive to peace and harmony of society.

Circumstances leading to Centralization:

Centralization has been the result of five main causes:

1. Where there is to be found accumulated capital with a few persons who seek to keep a close and watchful eye over their investment, they prefer centralized methods. We find a good example of this in Great Britain. When she got the hoarded wealth of India, she resorted to this form of production in the eighteenth century.

2. When there is a good deal of pressing work and there is a scarcity of labour, perforce, man grows extra hands in the form of tools or mechanism. A good example of this is the growth of industrialization in U. S. A. America's vast distances, virgin forests and mighty rivers obstructed man's progress through the continent. People

who could be harnessed to this work were few; hence the great conquest of natural forces.

3. Wherever standardized articles are needed, centralization is essential to multiply a particular kind of article on a mass scale. Such need may arise out of two causes: (a) Functionally, where the article by its very nature calls for standard parts, e. g. motor cars, railway rolling stock etc,, and (b) purposive, where it is necessary because large numbers need identically similar articles, as in the case of military equipments; examples of this may be seen in the militaristic nations of today, Italy, Germany and Japan.

4. Centralization in production may again be resorted to where labour is plentiful and it has to be manoeuvered to a plan of work, as in the case of Soviet Russia where regimentation of labour was resorted to bring about quick results.

5. Again it may be necessary when raw materials manufactures and markets are wide apart. It is only by unified control that these can be brought together so as to enable the machines to produce steadily and at an economic speed. Japan Germany and England furnish good examples of these.

Evils of Centralization:

We have mentioned only five causes, but these are not inseparable. In some countries more tnan one factor may bring about centralized production. These situations considered above are to a gret extent solved by resorting to centralized produotion, but the evils attached to such a method are not avoided. These evils again may be seen to correspond to the five causes.

1, Centralization which is the result of accumulation of capital. also leads to concentration of wealth is the hot-

bed of class cleavages.

2. When scarcity of labour drives men to methods of centralized production, naturally the labour force being few, purchasing power distributed in the process of production is also small. Therefore this inevitably leads to shortage in purchasing power and ultimately decreases the effectiveness of the demand and thus causes relative over-production, such as the one we witness in the world today.

3. Where need for standardization brings about centralization of production, there can be no variegation in the product. It also checks progress. By facilitating large scale equipment it encourages warfare.

4. Regimentation of labour leads to a greater concentration of power which is even more dangerous than concentration of wealth. The greater the numbers held by central control the greater can the power be.

5. Co-ordination of supplies of raw materials, production and finding markets for finished goods results in imperialism and warfare.

Decentralization :

Let us now turn towards decentralization and consider under which circumstances it can be used with advantage. Here again we shall look at the problem from the corresponding five points :

1. Where there is a scarcity of capital, it is not possible nor is it necessary to have centralisation. The only possibiliy is decentralization, An attempt is being made to meet this by the promotion of Limited Liability Caompanies togeher in scattered bits of capital but this does not solve the problem of distribution of wealth. It presents other difficulties.

2. Where there is a plethora of labour, or in other words, unemployment or under-employment, we shall be increasing the malady by centralizing the production.

3. Diversity and variegation is the very essence of decentralization. Where this is needed no machine can complete with hand work, more especially where the handwork has to be the expression of personality.

4. If democracy is to be attained, decentralization lays the required foundation. As centralization kills all initaitive in the masses, they succumb readily to central dictatorship. *Centralization is the grave of democracy.*

5. Where raw materials and markets are in the proximity of the producing centres, decentralization methods will serve well.

Advantages

1. Decentralization makes for more even distribution of wealth and makes people tolerant.

2. The process of production includes distribution of wealth, also as a large part of the cost goes to pay for the labour. Better distribution of purchasing power leads to effective demand and production is directed into a supply of needs, as the supply here will follow demand.

3. As each producer becomes an enterpreneur, he gets plenty of scope to exercise his initiative. with the responsibility of business on his shoulders, business-like methods and habits will be formed. When every individual develops himself, the average intelligence of the nation will increase.

4. The market being close to the centre of production, there is not much difficulty in selling the goods nor have we to create an artificial market by forced salesmanship.

5. Without centralization of either wealth or power there can be no disturbance of peace on a large nation-wide scale.

A glance at the above analysis should leave no doubt as to what will suit conditions in our own country. Of course as regards key industries and public utilties there is no alternative to centralization, but this can be done either co-operatively or by socialising such industries.

[from : SAROVDAYA]

✿

AKHIL BHARAT KRISHI GOSEWA SANGH

List of Permanent Invitees in Executive Committee meetings

1.	Shri Gokulbhai Bhatt	Jaipur
2.	,, Mukundbhai Trivedi	Ahmedabad
3.	,, Omprakashji Tyagi M. P.	New Delhi
4.	Dr. Ramji Sing M. P.	,, ,,
5.	Shri Mahabir Sing.	Agra
6	,, Govindrao Shinde	Bombay
7	,, Badrinarayan Gadodiya	Bombay
8	,, V. Ramchandran	Tirpur
9	,, Chairman of state Krishi Go-Sewa Sangh branches or representatives	
10	,, Chairmen or representatives of Bhartiya Khadi Gramodya Sangh	

AKHIL BHARAT KRISHI GO-SEWA SANGH
EXECUTIVE COMMITTEE (29.6.1977).

1. Shri Dharamsibhai Khatau — President
   Lxmi building Belard Pear Bombay 1
2. Shri Tulsidasbhai Vishram — Vice Chairman
   C/o Messers Vishram
   Kimji& Sons, Gulabi house
   111/15 Kazi Saiyad street Bombay 3
3. Dr. Shriman Narayan — Trnstee
   President Gandhi
   Smarak Nidhi Wardha
4. Shri Radhakrishna Bajaj — General Secretary
   Gopuri Wardha
5. Shri Narayan Jajoo — Secretary (Accounts)
   Gopuri Wardha
6. Shri Dashrathbhai Thakar — Secretary Bombay Office
   C/o Dayamandir 123–25
   Mumlbadevi Road Bombay 400003
7. Shri Premchandji Gupta — Secretary (Parliamentary wing)
   4/17 Rupnagar Delhi 7
8. Shri Mahabir Agarwal Raipur (M.P.) — Secretary (Goshala)
9. Shri Birdichandji Chaudhary — Secretary (South Region)
   Hindustan Carporation
   Domalguda Hyderabad (A. P.)
10. Shri Siddharjji Dhaddha Jaipur — Member
    President Sarva Sewa Sangha
11. Shri Thakurdas Bang Whrdha — Member
    Secretary Sarva Sewa Sangha

12. Shri R. K. Patil	Nagpur	Member
13. Shri J. N. Mauknr President Bharat Gosewak Samaj	Bombay	Member
14. Shri Vishwambharprasad Sharma Secretary Bharat Gosewak Samaj	Nagpur	Member
15. Prof. Shersing, M. P. Convenor Parliamentary wing Krishi Gosewa Sangha	New Delhi	Member
16. Smt. Ratan Kumari Devi, M. P. convenor : Parliamentary Wing Krishi Gosewa Sangha	Jabalpur	Member
17. Shri Ranchhoddasji Gattani, M.P. Ex-Justice, Rajasthan High Court	Jodhpur	Member
18. Shri D. N. Khurodi Ex Commissioner, Animal Husbandary, Government of Maharashtra.	Bombay	Member
19. Shri A. K. Karan Secretary Gandhi Smarak Nidhi U. P.	Sewapuri	Member
20. Shri Manmohan Chaudhary Chairman Gandhi Smarak Nidhi, Orrisa.	Cuttack	Member
21. Shri S. Jagannathan	Madurai	Member
22. Shri Ratibhai Gondhia Vice-Chairman : Khadi & Village Industries Commission.	Rajkot	Member

23. Shri Ravindra Upadhyaya Member, Khadi & Village Industries Commission.	Assam	Member
24. Shri Girdharilal Saraf	New Delhi	Member
25. Shri D. M. Burde	Banglore	Member
26. Shri Banwarilal Chaudhary	Hoshangabad	Member

Akhil Bharat Krishi Go-Sewa Sangh

(Standing Committee)

Karya -- Samiti

1. Shri Tulsidasbhai Vishram	Bombay	Vice chairman
2. Dr. Shriman Narayan	Wardha	
3. Shri Radhakrishna Bajaj	Wardha	General Secratary
4. ,, Thakurdas Bang	Wardha	
5. ,, Vishwambhar Prasad Sharma	Nagpur	
6. ,, Premchandji Gupta	Delhi	Secretary (Parliamentary wing)
7. ,, Dashrathbhai Thakar	Bombay	Secretary (Bombay office)
8. ,, Mahabir Agarwal	Raipur	Secretary (Goshala)
9. ,, Birdhichand Choudhary	Hyderabad	Secretary (South Region)
10. ,, Narayan Jajoo	Wardha	Secretary (Accounts)

चिंतन

कर्मयोग, भक्ति, ध्यान, ज्ञान, किसी की भी बिना निश्चय के कल्पना नहीं की जा सकती। कर्मयोग के निश्चय का अर्थ है कर्तव्य-निर्णय। भक्ति के निश्चय का नाम है श्रद्धा, निष्ठा। ध्यान का निश्चय है अचंचलता, धैर्य और निर्धार। ज्ञान का निश्चय यानी निःसंशयता, संदेह—रहितता।

★ ★ ★

समत्व का आदर्श सामने रख कर व्यवहार करनेंपर समता का क्षेत्र उत्तरोत्तर व्यापक और गहरा हो कर अंततः इसी जीवन में ब्रह्मसाम्य का अनुभव आ सकता है। वैसा हुआ तो समझें कि जनम जीता।

जिन्होंने समता पर अपने जीवन को रचा, वे ब्रह्म में ही स्थिर हो गये। क्यों कि समता की अव्यंग परिपूर्णता ही ब्रह्म है।

विनोबा

गीताई-[illegible]